P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6 * ISSUE-6 * (Part-1) February- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

वि”व में बढ़ती साम्प्रदायिकता के निदान का औजार सद्भावना (गाँधीवाद के संदर्भ में)

रणवीर सिंह
अतिथि व्याख्याता,
राजनीति एवं लोकप्र”ाासन विभाग,
डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय वि”वविद्यालय,
सागर म.प्र., भारत

सारांश

गाँधीजी अहिंसा को मानव का प्राकृतिक गुण मानते थे – और उनका विचार था कि मनुष्य स्वभावतः अहिंसा प्रिय है – वह परिस्थितियों बस ही हिंसावान बनता है। मनुष्य की अहिंसक वृत्ति का ही परिणाम है कि आदिमकाल का वह व्यक्ति जो परिस्थितियों बस नरभक्षी के रूप में जीवन व्यतीत करता था, आज का सभ्य और सुसंस्कृत प्राणी बन गया है। इसमें सन्देह नही कि संसार में हिंसा को पूर्ण अनस्तिव नही है, यह संसार में विद्यमान है और कभी–कभी अपना रूद्र रूप भी प्रकट करती है। परन्तु मानव समाज के विकास का इतिहास यही बताता है कि मनुष्य मूल रूप में अहिंसा प्रिय (सद्भावना) वाला है जिससे मानव जाति निरंतर बढ़ती जा रही है। अतः अंहिसा को मानवीय जीवन का सर्वोच्चय नियम मानते हुए गॉधी जी का मत था कि अहिंसा ही एक व्यवस्थित समाज की स्थापना और मानव जीवन की उन्नति का आधार है, गाँधी जी ने वि”व में बढ़ती साम्प्रदायिकता के निदान का औजार सद्भावना,अहिंसा माना ह, और मानव सभ्यता की रक्षा वर्तमान में वि”व बंधुत्व सद्भावना के आधार पर ही संभव है।

मुख्य शब्द : अहिंसा, सद्भावना, सामप्रदायिकता, सांप्रदायिक सद्भाव, हिन्दू–मुस्लिम एकता।

प्रस्तावना

यदि मानवता को प्रगति करनी है तो गाँधी के विचारों का होना आवश्यक है। मानवता द्वारा प्रेरित उनकी जिंदगी और सोच और उनके कार्य शांति द्वारा प्रेरित दुनिया को कायम रखे हुये हैं यह स्पष्ट है कि गाँधी का जीवन, उनके विचार, संवाद, बातचीत, सुलह, समझौता, प्रेम, क्षमा, सिद्धांत, सत्याग्रह की तकनीक, शांतिपूर्ण अर्थव्यवस्था, सामाजिक ओर राजनैतिक परिवर्तन, की जब कहीं और जहां कहीं इसकी आव”यकता हुई है इसके लिये गांधीवाद अत्यधिक प्रभावशाली साधन रहा है।

अमेरिकन पॉदरी डॉ. जान्स हॉम्स का कथन है कि– ''ईसा मसीह के बाद गाँधी जी वि”व के सबसे महान व्यक्ति थे।''

जिस दे”ा में गाँधी के अनयायी हो उस दे”ा को वर्तमान राजनीतिक साम्प्रदायिकता, जातिगत, धर्मगत कोई भी इसकी एकता अखण्डता को प्रभावित नहीं कर सकता, क्योंकि यह गाँधी का दे”ा है। यह दे”ा सदभावना, अखण्डता वाले लोगों का दे”ा है। जिस भारत के मुस्लमान जामा मस्जिद की चाबी हिन्दुओं को सौंप दे, और हिन्दू स्वर्ण मंदिर की चाबी मुस्लमानों को सौंप दें, यहां धर्म जाति आड़े न आये भाईचारा, एकता, वि”वास हो, क्योंकि वह गाँधी का दे”ा है। भारत में जहाँ राम–रहीम, ईसामसीह, बौद्ध और गुरूनानक एक साथ बिराजे हों वह दे”ा सद्भावना वाले भारतियों का दे”ा है, क्योंकि यह दे”ा गाँधी का दे”ा है।

अध्ययन का उद्दे”य

वि”व में बढ़ती हुई साम्प्रदायिकता का हल गाँधीवाद में निहित है। नस्लवाद का प्रतिकार गाँधीवाद का मूल आधार रहा है वर्तमान वि”व स्तर पर होने वाली साम्प्रदायिक हिंसा का एक मात्र हल गाँधीवादी पद्धतियाँ ही हो सकती है।

इस शोध पत्र का उद्दे”य वि”व में बढ़ रहे जातिवाद, साम्प्रदायिकतावाद एवं नस्लवाद की समस्याओं के समाधान में गाँधीवाद की भूमिका को रेखांकित करना है।

विशय विस्तार

गांधीजी ने सारे धर्मों के धार्मिक ग्रंथों का गहन अध्ययन किया था और उसके बाद वह इस निष्कर्ष पर पहुंचे थे कि सारे धर्मों का सार एक ही है।[1] क्योंकि वे उसी एक सत्य की तरफ इंगित करते हैं और इसलिए हम सबको काफी विनम्रता के साथ उस सार का अध्ययन करना चाहिए और विभिन्न धर्मों को मानने वालों के प्रति सम्मान एवं आदर का भाव रखना चाहिए। संसार में ऐसा कोई धर्म नहीं है जो प्रेम, दया एवं समाजसेवा की बात न करता हो। अभी तक हमारे घर में इन प्रार्थनाओं का गायन किया जाता है। इसके लिए हम सभी हर दिन सुबह एवं शाम में इकट्ठा होते हैं तथा उनका गायन करते हैं। चूंकि हम ईसाई, सिख, मुसलमान एवं जैन रिश्तेदारों को अपने विशाल परिवार में जगह देते हैं इसलिए विभिन्न धर्मों का पालन करने वालों के प्रति सम्मान का भाव पैदा होता है। गाँधी की सत्य की परिभाषा बहुत आसान है, जो आप सोचते है, वही बोलो और जो बोलते हो, उस पर अमल करो।

गांधी जी दक्षिण अफ्रीका के अपने प्रवास के दौरान से ही सामप्रदायिक एकता की जरूरत समझते थे। सामाजिक कार्य के दौरान उनके सहयोगी मुसलमान ही थे। दक्षिण अफ्रीका में उनके अनेक सहयोगी ईसाई थे जिन्होंने उनके अंतिम सत्याग्रह में हिस्सा लिया था। उनके सामने प्रधान सवाल उन हिन्दुओं एवं मुसलमानों के बीच सदभावना बनाये रखने का था। जो इस दे"ा में निवास करते है। गांधी जी ने यह महसूस किया था।[2] कि यदि हिन्दु, मुस्लिम एकता कायम हा जाए तो यहां रहने वाले अन्य समुदायों के बीच की एकता आसानी से शुदृढ़ हो जायेगी। उन्होंने कभी भी हिन्दु एवं मुसलमानों के साथ ईसाईयों एवं सिखों जैसे अल्पसंख्यक समुदायों के बीच गंभीर मतभेद नहीं देखा, फिर पारसी जैसे छोटे समुदाय की क्या बात इसलिए स्वभावतः उन्होंने हिन्दु मुस्लिम एकता पर जोर डालना शुरू कर दिया, उन्होंने इस बात पर जोर डाला कि हिन्दुओं को, जो इस दे"ा में बहुमत में है अल्पसंख्यकों की मदद करनी चाहिए और उन्हें कभी भी अपने अधिकारों के इस्तेमाल पर जोर डालने की वजह अल्पसंख्यक समुदाय का दिल जीतने की कोशिश करनी चाहिए।

उन्होंने कहा कि ''मैं दोनों समुदायों के बोच का संबंध मजबूत करने की कोशिश कर रहा हूं। यदि मेरे खून बहाने से भी दोनों के बीच का संबंध मजबूत हो तो मैं उसके लिये भी तैयार हूं। दोनों समुदायों को अलग–अलग रखने जैसी कोई बात किसी भी धर्म में नहीं है। सारी विविधताओं के बावजूद दोनों के बीच मौलिक एकता है। धर्म प्राकृतिक कानून का अपवाद नहीं होते। वे मौलिक एकता कायम करने की प्रक्रिया को तेज करने के लिए मानवता की एक देन है। इस क्षण का यह तकाजा नहीं है कि एक सर्वभौम धर्म की स्थापना की जाये बल्कि इस बात की ज्यादा जरूरत है कि विभिन्न धर्मों के प्रति परस्पर सम्मान की भावना विकसित की जाये।[3]

दक्षिण अफ्रीका के सार्वजनिक कर्मचारियों को पूर्व अनुभवों से छूट मिली हुई थी इसलिए वे पक्षपात रहित थे, भारत सार्वजनिक काम में लगने से पूर्व वर्षों तक राजनीति का शिकार रहा। 1915 में भारत में वापसी कर गांधी जी तक खिलाफत आन्दोलन में कूंद पड़े। तब उनक अनेक हिन्दू सहयोगी इससे नाखुश थे। उन्होंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि उनका वि"वास था कि खिलाफत आंदोलन वादा खिलाफी के कारण शुरू करना पड़ा। खिलाफत आंदोलन के बाद कभी भी दे"ा ने वैसी एकता नहीं महसूस की जैसी इस आंदोलन के दौरान देखी गई थी। कोहट वारदात के बाद अली बंधुओं के साथ उनका संबंध तनावपूर्ण रहा।[4] जिन्ना के साथ उनके मतभेद कभी नहीं सुलझे, गांधी जी ने इस बात पर जोर डाला कि मतभेदों के बावजूद अली बंधुओं के प्रति उनके स्नेह में कोई कमी नहीं आयी दूसरे गोलमेज सम्मेलन में मौलाना मोहम्मद अली का भाषण उनके अंतिम सार्वजनिक भाषणों में से एक रहा। इस भाषण से यह प्रतीत होता है कि अपने मतभेद के बावजूद मौलाना एवं गांधी जी ब्रिटिश शासन के साथ बातचीत करने के मुद्दे पर सहमत थे शायद मौलाना का भी गांधी जी के प्रति पूरा वि"वास खत्म नहीं हुआ था।

इमाम साहब एवं उनका परिवार उनके साथ भारत लौट आया, साबरमति आश्रम में रूका तथा बाद में दांडी यात्रा (1930) में शामिल हुआ। गांधी जी की गिरफ्तारो के बाद अब्बास तैयबजी को दांडी यात्रा की अगुवाई के लिए तैनात किया गया। दक्षिण अफ्रीका की तुलना मे भारत में राजनीतिक क्षेत्र में साम्प्रदायिक एकता कायम करना उनके लिए काफी कठिन रहा।

सन् 1948 में गांधी जी ने साम्प्रदायिक एकता कायम रखने के लिए अपनी जान कुरवान कर दो खिलाफत आंदोलन में शामिल होकर गांधी जी ने राष्ट्रीय स्तर पर साप्रदायिक सदभाव कायम करने का पहला प्रयास किया था, क्योंकि वह मुस्लिम समुदाय के गरीब से गरीब वर्गों तक संपर्क साधने में समर्थ थे। उन दिनों कांग्रेस तथा होम रूल लीम जैसे राष्ट्रीय संगठन की पहुंच मध्यम वर्गों से आगे तक नहीं थी।[5]

गांधीजी की सोच यह थी कि सारे मुनष्य अच्छे होते हैं। गांधीजी ने समुदाय के वि"वनीय पक्षों को छूने और लोगों की अच्छाई को प्रभावित कर उन्हें अहिंसा में बदलने का प्रयास किया। उनकी काम करने की पद्धति की क्षमता पर स्पष्टता दे"ा के लिए उस समय काफी अनोखी एवं नवीन थी। रचनात्मक कार्यों के माध्यम से राष्ट्र निर्माण के कार्यक्रम के मामले में वह स्पष्ट विचार रखते थे। स्वराज पाने के अलावा उनके दिमाग में यह विचार घर कर रहा था। इस कार्यक्रम का मकसद स्वदे"ाी, एवं सांप्रदायिक सद्भाव को बढ़ावा दना था। जिनमें पारसी, ईसाई, यहूदी तथा प्रभावशाली सिख के अलावा हिन्दुस्तानी को स्वीकृति, छुआ–छूत की समाप्ति, खादी एवं ग्राम उद्योग तथा अन्य कार्यक्रमों को भी बढ़ावा देना था। महात्मा गाँधी ने कहा था कि स्वयं को खोजने का सबसे अच्छा तरीका है दूसरों की सवा में स्वयं खो जाओ।[6]

अपने रचनात्मक कार्यक्रम में उन्होंने विभिन्न धार्मिक आस्था वाले लोगों के बीच सांप्रदायिक सद्भाव

को प्रथम जगह दी। इसका परिणाम था उनकी प्रसिद्ध पुस्तक 'द वे ऑफ कम्यूनल हार्मोनी', जिसे खुद गांधीजी ने लिखी थी। अपनी रचनाओं एवं भाषणों के संग्रह में कोई भी बार–बार इस बात से प्रभावित हो जाता है कि व्यक्तियों एवं समुदायों के बीच बेहतर समझ के लिए उनके तर्क में कितना भाव एवं ईमानदारी थी। यह पुस्तक उन कुछ समस्याओं पर गांधीजी के विचार का संकलन थी जिनसे समाज में दरार पैदा होती ह। दुनिया मे हर जगह लोग और लोगों का समूह एक–दूसरे के प्रति भय, शंका एवं घृणा भाव के कारण विभाजित हैं। यह दरार तब और गहरी हो जाती है जब यह विभाजन धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक, जातिगत अथवा रंग के आधार पर कायम हुआ हो। चाहे इसका जो भी स्वरूप हो, व्यक्तिगत अथवा सामाजिक मतभेद का बड़ा कारण असुरक्षा का भाव हे। एक व्यक्ति जो ईमानदार एवं अपने प्रति आ"वस्त हो, किसी से भी भय नहीं खाता और उसे कोई भय नहीं उकसाता है। हमारे पास ऐसे बहादुर लोगों के उदाहरण हैं, परन्तु ऐसे समाज या समुदाय का उदाहरण नहीं है जो पूरी तरह से ईमानदार और इस तरह भयरहित हो।

गांधीजी के शब्दों में ''एकता का मतलब राजनीतिक एकता नहीं है जिसे लादा जा सकता है। इसका मतलब अटूट हार्दिक एकता है। ऐसी एकता की प्राप्ति के हेतु हर व्यक्ति के लिए जो पहली जरूरी चीज है, वह चाहे उसका कोई भी धर्म हो, कि वह खुद हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, पारसी, यहूदी आदि धर्म का प्रतिनिधित्व करे। इस पर अमल के लिए हर व्यक्ति दूसरा धर्म मानने वाले के साथ अपनी व्यक्तिगत दोस्ती विकसित करेगा। उसका दूसरी आस्था के प्रति वही आदर का भाव होना चाहिए जो अपने धर्म के प्रति है।''[7]

गांधीजी व्यावहारिक आद"ावादी के रूप में अपने आपको प्रस्तुत करना चाहते थे और राष्ट्रीय मुद्दों को निपटाने के दौरान उन्होंने व्यावहारिक रूख अपनाने की कोशिश की थी। ऐसा करते समय उन्हें एक ही साथ प्रशंसा एवं आलोचना की स्थिति का सामना करना पड़ा। भविष्य में भी उन्हें अनेक विफलताओं, आलोकप्रियता एवं असंतोष की स्थिति का सामना करना पड़ता। खिलाफत आंदोलन में उनकी भागीदारी से उन्हें कुछ स्थाई दोस्त मिल गए, साथ ही कुछ ने उन्हें अपना आजीवन दुश्मन मान लिया। कुछ का तर्क था कि इस आंदोलन में शामिल होकर गांधीजी ने भारत में अपने सार्वजनिक जीवन में पहली बड़ी विफलता को आमंत्रित कर लिया जबकि कुछ अन्य लोगों का तर्क था कि अनेकों विफलताओं के बावजूद इस आंदोलन के कारण उनकी यात्रा अंतिम सफलता की दिशा में अग्रसर रहीं।

गांधीजी में वह गुण था जिसके कारण उनकी ओर शिक्षित के साथ–साथ अशिक्षित लोग भी खींचते चले गए। यह ऐसा गुण है जिसके मापने की जरूरत नहीं होती यह सबके सामने दृष्टिगोचर होता है। गांधीजी का कथन एवं कर्म एक दूसरे से मल खाता था। हिन्दुस्तान को भाषणबाजी से ज्यादा कदम उठाने की जरूरत है। लोगों ने इस नेता को समझा जो लोगों की भाषा ही बोलता था। उनकी हिन्दुस्तानी भाषा उनकी अपनी थी काशी के लोग इसे हिन्दी नहीं मानते थे जबकि लखनऊ के लोग उसे उर्दू नहीं मानते थे। वही गांधीजी कभी इसे हिन्दी और कभी उर्दू कहते थे। उनकी भाषा को, जिसे लोग समझते थे किसी व्याकरणाचार्य अथवा लिखावट वि"ोषज्ञ की मंजूरी की जरूरत नहीं थी उनकी भाषा मिट्टी की सुगंध लिये होती थी जो उनकी रग–रग में रमी हुई थी। और सांस्कृतिक रूप से जड़ जमा चुकी थी। यह रामायण, महाभारत एवं पाक कुरान की भाषा थी। कबीर तुलसीदास एवं गुरूनानक की भाषा थी।[8]

यह आम लोगों का एक नेता के साथ अनोखा सद्भावना का मिलन था। गांधीजी का ख्याल था कि आम लोगों के माध्यम से त्याग, बलिदान एवं उदारता की संस्कृति फिर विकसित होगी तथा दुनिया को अन्याय, जुर्म, शोषण एवं दमन से मुक्ति का पथ दिखायेगी। भारतीय गांधीजी के पास इस उम्मीद, अपेक्षाओं एवं इच्छा के साथ गये थे। यह समझा था कि क्योंकि भारतीय यह समझ गये थे कि यही व्यक्ति उनकी परेशानी समझता है और उन्हें स्वराज्य दिलायेगा।

6 से 13 अप्रैल, 1919 वाले सप्ताह का भारत के इतिहास में विशेष महत्व है। बाद में सप्ताह राष्ट्रीय सप्ताह के रूप में मनाया जाने लगा। अनेक वर्षों तक लोग उस यह सप्ताह के घटनाक्रमों एवं यादगार को संजोए रहे। उन्हें याद कर वे रोमांचित हो जाते थे। हिन्दू–मुस्लिम एकता का दूसरा सप्ताह 30 मार्च से 6 अप्रैल, 1919 रहा, जब मुबई में एक दिवसीय राष्ट्रव्यापी हड़ताल के दौरान लोगों ने रालेट ऐक्ट का विरोध किया था उस समय के प्रसिद्ध बेरिस्टर पं. मोतीलाल नेहरू ने इस कानून के बारे में कहा था कि यह बिना अपील, बिना वकील, बिना दलील का है का कहकर विरोध किया था, गाँधी जी ने कहा था कि यह कानून अनुचित, आजादी एवं न्याय के सिद्धातों विपरीत तथा प्राथमिक व्यक्तिगत अधिकारों तथा आत्म सम्मान खत्म करने वाला है। बैठक के दौरान सत्याग्रह संबंधी संकल्प लिया गया। संकल्प के प्रथम भाग में संकल्प के उद्दे"य, दूसरे भाग में किसी की तरह की परशानी सहने तथा जरूरत पड़ने पर जान–माल के त्याग का संकल्प लेने की बात थी। उन्हें वि"वास था कि संकल्प होकर वह राजनीतिक आंदोलन में आध्यात्मिकता का पक्ष पेश कर रहे हैं।

गांधीजी के मन में यह विचार आया कि उस दिन लोगों को अपना काम बन्द कर दे"ा भर में आम हड़ताल के लिए लोगों का अह्वान किया जाए और उस दिन उपवास एवं प्रार्थना सभा का आयोजन किया जाए। मुसलमान मुंबई में बड़ी संख्या में इस कार्यक्रम में शामिल हुए। हड़ताल हिन्दू–मुस्लिम एकता का अनोखा प्रद"ान साबित हुई। जुलूस एक मन्दिर एवं मस्जिद तक गया जहां एक महिला सहित दो हिन्दुओं ने उसे संबोधन किया। मुस्लिम महिलाएं नमाज अदा करने के लिए गाहे–बगाहे ही मस्जिद जाती हैं। दो लोगों ने सौ–सौ रूपए हिन्द स्वराज के लिए दिए। इनमें एक मुसलमान था। यह सामाजिक–सद्भावना थी। गांधीजी ने यह उम्मीद जाहिर की कि हिन्दू–मुस्लिम एकता कायम रहेगी जो लोगों को एक–दूसरे से जोड़ती है।[9]

इसके बाद भारत में शांति सभा भी बनी। एक सप्ताह बाद मुंबई एव अहमदाबाद में बड़े पैमाने पर हिंसक

वारदात हुई। दंगे एवं हिंसा के दौरान शांति सेना से जिस कदम की उम्मीद थी, वह मगनवाल गांधी, इमाम साहब, अब्दुल बावाजीर, विनोबा भावे तथा नरहरि पारीख जैसे आश्रमवासियों और बाद में गांधीजी एवं महादेव देसाई ने किया। शांति सभा का काम दोनों समुदायों के लोगों को जागृत करना, हिंसक वारदात एवं दंगे रोकना, दंगाग्रस्त इलाकों में जाकर लोगो की भावना पर मरहम लगाना, सार्वजनिक आग्रह करना, मूक बने लोगों को अपने कर्तव्य के प्रति सजग करना तथा अफवाह फैलने से रोकना था। ये सारे काम सीधे गांधीजी के नेतृत्व में किए गए जिन्होंने जनता से कहा था, ''मैं आपका सिपाही हूं, परन्तु संघर्ष के दौरान मैं आपका नेता हूं, इसलिए मैं जो कुछ कहूं उस पर अमल करना।''[10]

गांधीजी इस्लाम धर्म को उसी तरह शांति का धर्म मानते थे जिस तरह इसाइयत, बौद्ध तथा हिन्दुत्व को। निस्संदेह सबमें अंतर है। इस बारे में उनका कहना था कि पाक कुरान से कुछ ऐसी बातों को उल्लेख किया जा सकता है। जो विपरीत लगती हो, परन्तु ऐसा वेद से भी कुछ पंक्तियों का उल्लेख किया जा सकता है। जो विपरीत लगे।

गांधीजी ने कहा था, ''कुरान के अध्ययन से मुझे वि"वास हो गया है। कि इस्लाम का आधार हिंसा नहीं है, बल्कि शुद्ध शांति है। यह बदले की कार्रवाई से ज्यादा सहन"ीलता को स्थान देता है। ''इस्लाम'' शब्द का अर्थ ही शांति है, जो अहिंसक है। भारत के बारे में मेरा अनुभव कहता है कि हिन्दू और मुसलमान जानते है कि कैसे वे आपस मे मिलकर शांतिपूर्वक रह सकते हैं। मैं यह मानने से इन्कार करता हूं कि लोगों ने अपनी चेतना खो दी है ताकि एक–दूसरे के साथ शांति के साथ रह सकें, क्योंकि वे वर्षों से एक–दूसरे के साथ रहते आए हैं। दुश्मनी सदा कायम नहीं रहेगी। महात्मा गाँधी ने कहा था, मेरी राख में से ही और अधिक गाँधी जन्म लेगें 'दुनिया के बहुत से नेताओं ने गाँधी की पद्धति और जीवन से प्रेरणा ली थी, और उनके रास्ते पर उन्होंने चलना जारी रखा था।''[11] गाधी जी की इसी साम्प्रदायिक सदभावना के कारण उन्हे विभिन्न प्रकार की उपाधियों से सम्मानित किया गया क्योकि उन्होने मानव सेवा को ही सबसे बडा धर्म माना उन्होने ना कभी किसी की जाती पूछी ना उसका धर्म वह निस्वार्थ भाव से मानव एकता के प्रयास में लगे रहे दक्षिण अफ्रीका प्रवास के दोरान जब अफ्रीकी लोंगो का सहयोग किया तो उन्हे कर्मवीर कहा गया जबकि अग्रेजो ने उन्हे कुली बेरिस्टर कहा वही जब उन्होन गंदी बस्तियों में सफाई का कार्य किया तो उन्हे प्रेम वश भंगी शिरोमणी या भंगी फकीर कहा गया, सेवा ग्राम में अतिथियों ने उन्हे सेवा ग्राम का संत सम्बोधित किया रवीन्द्र नाथ टैगौर ने महात्मा कहा तो सुभाषचंद बोस ने 'राष्टपिता' वही विस्टन चर्चिल ने अर्ध नंगा फकीर कहा तो पंडित नेहरु ने बापू और पश्चिम सीमा प्रान्त के बलूचियों ने मलगं बाबा कहकर महात्मा गांधी के प्रति अपना प्यार जताया बास्तव में वि"व में बढती साम्प्रदायिकता का निदान महात्मा गाधी के विचारा को औजार के रुप में अपना कर शांति एकता, सदभावना सहयोग वि"व के द्वारा किया जा सकता है[12] अहिंसा के पुजारी को पूरी दुनिया उनके अहिंसावादी आचरण और उनकी बचनबद्धता के लिए उन्हे याद करती रहेगी। पूरे वि"व में सद्भावना के पुजारी महात्मा गाँधी के नाम पर 48 सड़के है, जबकि उनके ही नाम पर भारत में 53 मुख्य मार्ग है। महात्मा गाँधी ने अपने जीवन में 16 आदर्शो को खास तबज्जो दी।[13]

निश्कर्श

गॉधी की सदभावना वाले रास्ते पर दुनिया के सबसे बडे संगठन संयुक्त राष्ट संघ ने शुरुआत कर दी है 2 अक्टूबर गाँधी जयन्ती को पूरे वि"व में अहिंसा दिवस संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा घोषित करना, और मनाया जाना, गाँधी की सद्भावना ही है।

अंत टिप्पणी

1. *शोभना राधाकृष्ण अक्टूबर 2014, कांग्रेस संदे"ा 24 अकबर रोड दिल्ली, पेज 16–17 ।*
2. *जनवरी 2016 कांग्रेस संदे"ा 24 अकबर रोड दिल्ली, पेज 35*
3. *डॉ. लालती देवी महात्मा गांधी का जीवन दर्शन 2010, पेज 22*
4. *डॉ. रणवीर सिंह ठाकुर गांधीवादी समाजवाद शोध पत्र, पेज नं. 103–104*
5. *सविनय अवज्ञा के बाद, 29 अप्रैल 2013, पेज 140।*
6. *प्रवीण डाबर अप्रैल 2013 जलिया बाला वाग वह चिंगारी जिसने आजादी की आग सुलगाई, पेज 34।*
7. *पवीण डावर–युवा नेतृत्व में गांधी जी का वि"वास वर्ष 2010, पेज 20*
8. *शोभना राधाकृष्ण साम्प्रदायिक सद्भावना का गांधीवादी तरीका अक्टूबर 2014, कांग्रेस संदे"ा, 24 अकबर रोड दिल्ली, पेज 16–17 ।*
9. *डॉ. लालती देवी महात्मा गांधी का जीवन दर्शन 2010, पेज 42*
10. *शोभना राधाकृष्ण महात्मा गांधी द्वारा नेतृत्व के आदर्शों का निर्धारण अक्टूबर 2014, कांग्रेस संदे"ा 24 अकबर रोड दिल्ली, पेज 55–60 ।*
11. *कांग्रेस संदे"ा 24 अकबर रोड, दिल्ली अक्टूबर 2014, पेज 79–84*
12. *अखतर मलिक– इतिहास के लेखक और वीडियो ब्लागर है। रोजगार और निर्माण, आधुनिक भारत के प्रमुख तथ्य, भोपाल 2018 पेज न.33*
13. *इंण्टर–नेट गूगल के द्वारा।*